DELHIN/2007/20081 Date of Publication: 13/08/2023 DL(N)/202/2022-24

अध्यात्म सन्देश

मूल्य 10 रु.

वर्ष–17 अंक–03 अगस्त 2023 पृष्ठ 12 वजन 20 ग्राम

सत्संग भवन – सी॰एस॰/ओ॰सी॰एफ॰ नं॰ 6, ब्लॉक–जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85
मो॰ : 9810344596, 011–27574151
ई–मेलः atmagyanp@gmail.com
वेबसाईटः www.atmagyanprakashmandal.com

सम्पादक : प्रेमी गजेन्द्र सिंह
बी–99, विजय विहार, फेस–2, दिल्ली–110085

इस अंक में प्रकाशितः–

1. अपने अन्दर सकारात्मक ऊर्जा पैदा करना ही अध्यात्म कहलाता है।।
2. साधक को आत्मशोधन के लिए निरन्तर साधना करनी चाहिए।
3. अव्यक्त ब्रह्म को अनन्य प्रेम से व्यक्त किया जा सकता है।
4. अध्यात्मिकता में समग्रता, सम्पूर्णता एवं समत्व का समावेश होता है।
5. जीवन और प्रकृति दोनों ही परमात्मा की चेतन और जड़ शक्तियाँ हैं।
6. अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन।
7. पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार।

महात्मा जी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थः

1. चेतन योग दर्शन
2. अध्यात्म दर्शन
3. आध्यात्मिक जीवन के संस्मरण
4. फिलौस्फी ऑफ पीस (अंग्रेजी में)
5. अध्यात्म प्रेम उदगार (कुमाँऊनी लोकगीत)
6. अध्यात्म ज्ञान ग्रंथ (भाग–1)
7. चेतन ज्ञान भजन माला पांच संस्करण
8. निष्काम कर्म योग दर्शन
9. रूहानी गुरू ज्ञान ग्रन्थ (भाग–1)

महात्मा जी द्वारा जारी ऑडियो एवं वीडियों कैसेट्सः

1. चेतन वाणी–1 (ऑडियो कैसेट)
2. चेतन वाणी–2 (ऑडियो कैसेट)
3. चेतन वाणी (कुमाऊँनी वीडियों कैसेट)
4. चेतन वाणी (कुमाऊँनी ऑडियों कैसेट)

संपादक की लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को उद्धृत या उसका अनुवाद करना दण्डनीय अपराध होगा। किसी भी विवाद का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

सत्संग कार्यक्रमः– चेतन योग आश्रम में गर्मियों में 3.00 बजे से 5.00 बजे तक तथा सर्दियों में 2.00 बजे से 4.00 बजे तक प्रत्येक रविवार को 'अध्यात्म सत्संग' होता है। जिसमें सभी श्रद्धावान सुधी पाठकगण आमंत्रित हैं सत्संग सुनकर "अध्यात्म ज्ञान" प्राप्त करें और अपने जीवन को सफल बनायें।

संस्था का वेबसाईट : www.atmagyanprakashmandal.com है

सम्पादकीय

रुहानी गुरू आनन्द के दाता, शाश्वत् दण्डवत् प्रणाम!!!

अपने अन्दर सकारात्मक ऊर्जा पैदा करना ही अध्यात्म कहलाता है

चंचल मन में अध्यात्म का समावेश बड़ी मुश्किल से हो पाता है क्योंकि अध्यात्म में प्रवेश मन को विषयों से हटाये बिना सम्भव नहीं है। हमारी विषयासक्त इन्द्रियाँ हमें अपने मोह जाल में फंसाये रखती हैं और हमारा मन भी विषयों से अलग होना नहीं चाहता है परन्तु यदि हम अभ्यास के द्वारा मन को एकाग्र एवं संयमित करने का प्रयास करें तो प्रयत्न करने पर हमें आंशिक सफलता मिल सकती है निरन्तर अभ्यास से हमारे अन्दर की नकारात्मक सोच समाप्त होने लगती है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होने लगता है जिससे हम आत्म विश्वास से भर जाते हैं। हमारे स्वभाव में अध्यात्मिकता झलकने लगती है। वास्तव में यह धारणा बनी हुई है कि अध्यात्म के लिए घर–बार सब कुछ छोड़कर जंगल में जाकर तपना पड़ता है परन्तु यह धारणा गलत है क्योंकि हमारे अन्दर त्याग भावना विकसित नहीं हुई तो संसार की आसक्तियाँ जंगल में भी हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। अध्यात्म तो अपने मन को संयमित करने तथा अपने अन्तकरण को नकारात्मक विचारों से मुक्त करने का विज्ञान है। मानव जीवन की उत्कृष्टता उसकी बाहरी शान–शौकत पर निर्भर नहीं करती है बल्कि इस पर निर्भर करती है कि उसके अन्दर कितना निस्वार्थ–प्रेम, सहृदयता, करूणा एवं क्षमाशीलता आदि भाव भरे हुए हैं। महर्षि अष्टावक्र द्वारा अष्टावक्र गीता में लिखा गया है कि मानव की बाहरी पदार्थों पर निर्भरता व सांसारिक वासना ही मनुष्य के बन्धन का प्रमुख कारण है और यही उसके पतन का भी कारण है। जीव को अपनी मुक्ति के लिए जंगलो, पर्वतों की गुफाओं व निर्जन वनों में जाने की आवश्यकता नहीं है अगर हमारा अन्तकरण शान्त नहीं हुआ तो संसार की वासनाएँ वहाँ भी हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। उनका कथन है कि अध्यात्मिक उपलब्धि के लिए समाज, परिवार, कारोबार पत्नी तथा बच्चों का परित्याग नहीं करना पड़ता बल्कि अपने अन्दर राग–द्वेष, ईर्ष्या–क्रोध एवं नकारात्मक भावनाओं को तिलांजली देनी पड़ती है। यदि मानव आत्म–बोध व आत्म–मुक्ति चाहता है तो वह अपने अन्त–करण से विषयों को विष की तरह त्यागने का प्रयास करे एवं दया तथा सन्तोष का मार्ग अपनाए। मनुष्य की सबसे बड़ी अज्ञानता तो यही है कि वह अपनी चैतन्यता से अलग होकर इस नश्वर शरीर को ही "मैं" मान लेता है जब कि यह शरीर पंचभूतों से बना एक पुतला मात्र है जो कुछ समय के लिए ही उसे मिला है और यह संसार भी एक सराय के समान है जहाँ कुछ समय के लिए ही विश्राम करना पड़ता है यहाँ हमारा कुछ भी नहीं है। हमें इस माया जाल से कैसे मुक्त होना है इसके लिए सकारात्मक सोच ही विकसित करनी होगी। उसी से हम आत्मस्वरूप में स्थित होंगे यही सच्चा जीवनदर्शन है इसी में आनन्द की गंगा बहेगी।

साधक को आत्मशोधन के लिए निरन्तर साधना करनी चाहिए।

यह मानव जीवन परमात्मा की अनुपम कृति है अतः इसकी हर हाल में रक्षा करनी चाहिए। इस मनुष्य शरीर में ही परब्रह्म परमेश्वर की चेतना बीज रूप में विद्यमान है। निरन्तर साधना, संयम, स्वाध्याय एवं सेवा से वह बीज अंकुरित होता है पुष्पित तथा पल्लवित होता है निरन्तर तप साधना से ही मानव में देवत्व का उदय होता है। जब जीवात्मा अपनी संकीर्णता को त्याग देता है तब वह परमात्मा की अनन्त विभूतियों को प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है अतः साधक को चाहिए कि वह तप साधना के द्वारा अपनी चेतना को परमात्मा के प्रति समर्पित करे। साधना का प्रत्यक्ष चमत्कार साधक के सामने जल्दी ही प्रकट हो जाता है। जो व्यक्ति अध्यात्म क्षेत्र में प्रविष्ट होकर लोक–कल्याण या लोक सेवा करना चाहता है उसे पहले साधक बनना चाहिए। साधना के बिना व्यक्ति का स्तर इतना उच्च स्तर का नहीं बन पाता है जितना सेवा कार्य के लिए आवश्यक होता है। ऐसा इसलिए है कि मनुष्य में परमात्मा की चेतना साधना के माध्यम से ही प्रवाहित होती है। साधना ही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमात्मा की विभूति मानव में अभिव्यक्त हो पाती है। जो व्यक्ति अपने जीवन में भावपूर्ण परमात्मा को समर्पित हो जाता है उसकी साधना के असफल होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। वास्तव में साधना का आधार है "आत्मशोधन" इसके द्वारा निरन्तर अपने को बेहतर बनाये रखने का प्रयास करते रहना चाहिए। अधिकांश साधक साधना का उद्देश्य सिद्धियों की प्राप्ती कर लेना मान कर अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है। कुछ लोग छोटी मोटी पूजा पाठ यज्ञ आदि कर लेने मात्र से ही आत्म कल्याण या आत्म साक्षात्कार या परमात्मा प्राप्ती के महान लक्ष्य को पा लेने वाली बालक्रीड़ाओं को करने में लगे रहते हैं। जिनसे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है। जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए साधक को अपने अंदर भरी दुष्प्रवृत्तियों को निकालकर सद्प्रवृत्तियों का समावेश करना चाहिए जीवन में जो पाप कर्म किये उनका प्रायश्चित करना चाहिए। आत्म शोधन के लिए सकाम कर्मों का त्याग तथा निष्काम कर्मों के प्रति सजग रहना पड़ता है। निष्काम कर्म किये बिना आत्म शोधन सम्भव नहीं है। सब कुछ जानते हुए भी मानव सकाम कर्म करता हुआ अघाता नहीं है फिर भी यह सोचता है कि हमें साधना का समुचित परिणाम नहीं मिल पा रहा है। कर्म की काट कर्म से ही सम्भव है अतः बुरे कर्मों का प्रायश्चित करते हुए निरन्तर निष्काम कर्म करते

हुए परमात्मा को समर्पित होने का प्रयास करना चाहिए। साधक का जीवन एक साहसी व्यक्ति का जीवन होता है जिसे साधना करनी है उसे मोह का त्याग कर देना चाहिए त्याग के बिना साधना का लाभ नहीं मिलता है प्राचीन समय में सुख साधनों का अभाव होते हुए भी अनेक महान आत्माओं ने साधना की ऊँचाईयों को छुआ परन्तु आज का साधक समस्त सुविधाओं के होते हुए भी साधना क्रम में चूक कर जाता है। साधक को चाहिए कि वह सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके चित्त को स्थिर कर परमात्मा का ध्यान करे। मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए सर्वोच्च सोपान साधना है। हमें अपने जीवन में इसका प्रत्यक्ष प्रयोग करना चाहिए। आत्मिक प्रगति का पथ तो साधक को स्वयं ही प्रशस्त करना पड़ता है सन्त तो केवल मार्ग दर्शन करते हैं। आदर्शवादिता साधना पथ पर चलकर ही विकसित होती है आत्मचिन्तन आत्मनिर्माण तथा आत्मविकास साधना के बिना सम्भव नहीं हैं।

भजन

साधन करके मेरे अन्दर, जागा ज्ञान वैराग।
जीवन में आनन्द मिला, खुल गये हमारे भाग।।
निश दिन साधन भजन से, जुड़ गया प्रभु से तार।
जीवन की नैया संभल गयी, गुरू मिले पतवार।।
निराकार ब्रह्म इस जीवन में होगये अब साकार।
अपने अन्दर मिल गय अमृत ज्ञान भण्डार।।
ज्ञान का झरना बड़ा सुहाना, बरसे अखण्ड फुहार।
ज्ञान खटोला उड़ा गगन में, सेवक शब्द सवार।।
तीन लोक का भ्रमण करके जागी सुरति हमार।
इस जगत से पार मिला, मुझे रूहानी गुरू का द्वार।।
सुन्न शिखर में चढ़ गया सेवक, गुरू का मिला सहार।
ब्रह्म सागर में लगी समाधि मिट गये सभी विकार।।
अनहद गरजे अमृत बरसे, चमके ज्योति अपार।
चेतन योगी गुरू कृपा से हो गये पवित्र विचार।।

अव्यक्त ब्रह्म को अनन्य प्रेम से व्यक्त किया जा सकता है

अव्यक्त ब्रह्म अनादि एवं अनन्त हैं क्योंकि उसका कोई आरम्भ एवं अन्त नहीं है वह सत्य स्वरूप परमात्मा एक है फिर भी अध्यात्मिक जगत में अगणित साधकों ने उसे अपने हृदय में सतत ध्यान करते हुए विभिन्न रूपों में प्राप्त किया। इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि "एकंसद् विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् उसे कोई सगुण (साकार) तथा कोई निर्गुण (निराकार) रूप में भजता है फिर भी साधक अनन्य प्रेम से उस ब्रह्मानन्द की अनुभूति कर लेता है। वह ब्रह्म असमी व अरूप है क्योंकि उसकी कोई सीमा तथा कोई रूप नहीं है। वही अरूप, निगुर्ण, निराकार व अव्यक्त ब्रह्म अपनी इच्छा व संकल्प मात्र से सगुण साकार एवं व्यक्त हो जाता है क्योंकि उस सर्वज्ञ सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। उस ब्रह्म की कोई प्रतिमा नहीं है फिर भी उस ब्रह्म से निश्छल एवं निर्दोष भक्तों के लिये स्वयं को प्रतिमा में भी प्रकट किया अनेक सगुण उपासकों के लिए उन्होंने स्वयं को साकार रूप में प्रकट किया। उस निर्गुण परमात्मा की महिमा अपरम्पार है इसलिए उस निर्गुण और सगुण में उसी प्रकार कोई भेद नहीं है जैसे जल और ओले में कोई भेद नहीं है। जल और ओला दोनों जल ही हैं इसी प्रकार निर्गुण और सगुण दोनों एक ही हैं। व्यापक ब्रह्म परमानन्द स्वरूप पुराण पुरूष हैं इसे रामचरित मानस में इस प्रकार वर्णित किया गया है।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम तें प्रकट होहिं मैं जाना।।

परमात्मा सब जगह समान रूप से व्यापक है परन्तु वे प्रेम से ही प्रकट होते हैं ऐसा कौन सा देश, काल दिशा और जगह है जहाँ परस्पर ब्रह्म न हो वे चराचर होते हुए भी सबसे रहित और विरक्त है परन्तु साधक के हृदय में उस परमपिता परमेश्वर के प्रति जैसी भक्ति और प्रीति होती है वहाँ वे उसी रीति से प्रकट हो जाते हैं। जैसे अग्नि अव्यक्त रूप से सर्वत्र विद्यमान है परन्तु साधन विशेष के द्वारा वह कहीं भी प्रकट हो जाती है। ज्ञान, अज्ञान, हर्ष–विषाद, अहंता और ममता ये सभी जीव के धर्म हैं इनके रहते हुए जीव उस ब्रह्म की प्राप्ति कैसे करे? इसके समाधान हेतु सन्तों ने बताया है कि मनुष्य देह का अभिमान त्याग कर अपने सम्पूर्ण कर्मों को निष्काम भाव से

करते हुए पूर्ण रूप से परमात्मा को समर्पित हो जाय और प्रार्थना करे कि मैं न योग जानता हूँ न जप जानता हूँ, न तप जानता हूँ मैं तो आपका हूँ इसलिए मुझे अपने में मिला लीजिये जो मानव इस भाव से परमात्मा को भजता है उसे परमात्मा अपनी शरण में ले लेते हैं। वास्तव में हमें यह मनुष्य शरीर एक दुर्लभ साधन के रूप में मिला है इस पूरी शरीर रूपी साधन से साधना करते हुए उस ब्रह्म की अनुभूति करते हुए उस परमात्मा को प्राप्त करें इसलिए इस मनुष्य शरीर को साधन का धाम और मोक्ष का द्वार कहा गया है जो मनुष्य इस साधन का सदुपयोग योग साधना में करता है वह परम सुख को प्राप्त करता है परन्तु जो इस साधन का दुरूपयोग भोग वासना में करता है वह इस लोक और परलोक दोनों में ही दुख पाता है और सिर धुन–धुन कर पछताता है तथा अपने दुखों के लिए दूसरों को दोषी ठहराता है। इस प्रकार जो मानव इस शरीर रूपी साधन से ब्रह्म प्राप्ती का पुरूषार्थ नहीं करता वह अमृत को छोड़कर विषय रूपी विष का ही पान करता है और चौरासी लाख योनियों में ही चक्कर लगाता है। जो लोग इस मनुष्य जीवन को सफल बनाना चाहते हैं जीवन में शान्ति आनन्द और कर्म बन्धनों से मुक्ति चाहते हैं उन्हें सच्ची श्रद्धा–विश्वास व अनन्य प्रेम द्वारा नित्य ब्रह्म, चिन्तन, ध्यान, सुमरन संयम तथा सेवा निरन्तर करते रहना चाहिए ऐसा करते हुए ही जीवात्मा जन्म–मरण के बन्धनों से सदा के लिए मुक्त हो जाती है।

भजन

रूहानी गुरू की शरण में आओ, जानों रूहानी ज्ञान को।
मृत्यु रोग से मुक्ति पाओ, करलो अमृत पान को।।
गुरू शरण में प्रेम से आओ, तजकर सब अभिमान को।
गुरू सेवा में समर्पित होकर जानो आत्मज्ञान को।।
सत्य असत्य का भेद खुलेगा, मेटो सकल अज्ञान को।
रूहानी गुरू के दर्शन करलो, पाओ पद निर्वाण को।।
गुरू ज्ञान के दर्पण में, देखों अपनी पहचान को।
अष्ट पहर में सोवत जागत, कर लो ब्रह्म स्नान को।।
इस जीवन को सफल बनालो, प्रकट करो गुप्त ज्ञान को।
सकाम कर्म को तजकर बन्दे, करलो कर्म निष्काम को।।
रूहानी रूहों के खेल को देखो, स्थिर करके ध्यान को।
चेतन सन्त की वाणी सुन लो, पहुँचो गुरू के धाम को।।

अध्यात्मिकता में समग्रता, सम्पूर्णता एवं समत्व का समावेश होता है।

अध्यात्मिकता आज के युग की ही नहीं बल्कि आज के समाज की भी शाश्वत अपेक्षा है क्योंकि उसके अन्दर समग्रता तथा समत्व का समावेश है बिना समत्व के स्वार्थ भावना मानव के अन्दर पनपती रहती है। भौतिक व्यक्तित्व का निर्माण अहंकार और स्वार्थ की रेखाओं के द्वारा होता है जबकि अध्यात्मिक व्यक्तित्व का निर्माण सत्यता एवं समता के आधार पर होता है। जिस व्यक्ति में स्वार्थ एवं अहंकार की मात्रा जितनी कम होगी वह उतना ही अध्यात्मिक व्यक्तित्व वाला होता है। उसका आधार कल्पनाओं पर आधारित नहीं होता है। मनुष्य समाज में रहकर परिवार गांव देश एवं पदार्थों के साथ सम्बन्ध बनाकर रहता है सामाजिक सम्बन्ध छोड़े नहीं जा सकते। सम्बन्धों का जीवन अध्यात्मिक व्यक्ति को भी जीना पड़ता है परन्तु भौतिक और अध्यात्मिक दोनों के जीवन में बड़ा अन्तर होता है भौतिक व्यक्ति अहंकार और स्वार्थ के साथ सम्बन्ध जोड़ता है उसका कोई भी सम्बन्ध ऐसा नहीं होता जिसकी पृष्ठभूमि में अहंकार न बोलता हो या स्वार्थ की परछाई न होती हो। मैं हूँ "अहं अस्मि" यह अनुभूति तो शाश्वत है, परन्तु जब व्यक्ति "मैं धनवान हूँ", "मैं बलवान हूँ" या "मैं विद्वान हूँ" ऐसा कहता है तो उसमें अहंकार छिपा होता है। अपने अस्तित्व बोध का अहं खतरा पैदा नहीं करता परन्तु मैं शासक हूँ मैं शक्तिशाली हूँ अहं खतरे पैदा कर देते हैं। इस तरह का अहं आदमी–आदमी के बीच भेद की रेखा खींच देता है वह स्वयं को कुलीन तथा दूसरे को कुलीन नहीं समझता है वह स्वयं को बड़ा और दूसरे को छोटा समझता है। आज अहंकार के कारण ही जातिवाद की जड़े गहरी होती जा रही हैं अधिकांश व्यक्ति अपनी जाति को उच्च तथा दूसरी जाति को निम्न मानकर उनसे भेद–भाव करते हैं जबकि पहले समाज चार वर्गों में ही बँटा हुआ था। अहंकार के अलावा दूसरा तत्व स्वार्थ है स्वार्थ का अर्थ मेरा अर्थात् केवल मेरे लिए इस प्रकार जिसके साथ मेरा शब्द जुड़ गया वह अपना और जिसके साथ तेरा शब्द जुड़ गया वह दूसरे का हो गया अर्थात् स्वार्थ में तेरा पिता, तेरा घर तथा मेरा पिता और मेरा घर अलग हो गये। दो सगे भाई जब तेरे मेरे में रहते हैं तो उनके बीच में दीवारे खिंच जाती हैं इस प्रकार भौतिक व्यक्तित्व का अर्थ होता है एक दूसरे को तोड़ना या बाँटना परन्तु अध्यात्मिक व्यक्तित्व किसी को तोड़ता नहीं बल्कि जोड़ता है। क्योंकि अध्यात्म में तोड़ने वाला कोई तत्व नहीं होता है। सभी यह बात अच्छी प्रकार से जानते हैं कि हमारा यहाँ अपना

कुछ भी नहीं है फिर भी कल्पनाओं की रेखाएँ खींची जाती हैं। यहाँ हर किसी व्यक्ति या पदार्थ को अपना मान लिया जाता है। जिससे अलग होने पर दुख महसूस होता है वास्तव में यहाँ अपना कुछ भी नहीं होता है केवल मान लिया जाता है अपना कुछ होता नहीं केवल सारा भ्रम है जब अपनी आँखों के सामने यह भ्रम टूटता है तब आदमी अपने आपको ठगा सा महसूस करता है सारा संसार इस धोखे की अनुभूति कर चुका है तथा कर रहा है वास्तव में यह सब भौतिक व्यक्तित्व की प्रकृति है इससे बचा जा सकता है। यद्यपि भौतिकवादी एवं अध्यात्मवादी दोनों ही पदार्थ का उपभोग करते हैं परन्तु इसके उपभोग में भी अन्तर है। अर्थात् अध्यात्मिक व्यक्ति पदार्थ का सही उपयोग करता है जिससे सुख उपजता है परन्तु भौतिक व्यक्ति पदार्थ का उपभोग करता है जिससे दुख उपजता है जब अध्यात्मिक व्यक्तित्व बनता है तब सबसे पहले अहंकार और स्वार्थ की बेड़ियाँ टूटती हैं जब तक ये बेड़ियाँ नहीं टूटती तब व्यक्ति अध्यात्मिक नहीं बन सकता संसार में बनने वाले सभी सम्बन्ध शाश्वत नहीं हैं ये तो भावों के अनुसार बनते और बिगड़ते रहते हैं जीवन तो एक शाश्वत प्रवाह है इसे अध्यात्म के साथ जोड़कर समग्र एवं सम्पूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

भजन

मानव अपनी सफाई देख ले, उम्र भर की कमाई देख ले।
छोड़ी धर्म की रेख रहा दूसरों को देख, जरा अपनी बुरई देख ले। उम्र भर...
घोर नरक से मूर्ख प्राणी तेरे बन्धन छूटे।
इस पृथ्वी पर आकर तूने वायदे कर दिये झूठे।।
करी कितनी भारी भूल, बोया पेड़ बबूल, राह कांटों की बनाई देख ले। उम्र भर...
उस मालिक की कृपा से तुझे चोला मिला है मानव।
मानव कर्म को भूल गया है बन बैठा है दानव।
मानव कर्मों से हटकर, दुर्व्यसनों में फंसकर तू ने जिंदगी गंवाई देख ले। उम्र भर...
सकाम कर्मों में फंसकर तूने हीरा जनम गंवाया।
सत्संग सेवा और भजन में कितना मन को लगाया।
तुझे ज्ञान मिले अनमोल, अपने अन्दर के पट खोल।
जरा अन्दर की सच्चाई देख ले। उम्र भर....

जीव और प्रकृति दोनों ही परमात्मा की चेतन और जड़ शक्तियाँ हैं

हमें अपने चारों ओर दिखायी देने वाला यह ब्रह्माण्ड प्रकृति का रूप है इसलिए हमारा यह शरीर भी प्रकृति तत्वों से बना एक पुतला मात्र है। प्रकृति जड़ है इसमें चेतना नहीं है इसलिए शरीर भी जड़ हुआ। शरीर में जो चेतना दिखायी देती है वह जीवात्मा के कारण ही है। शरीर का निर्माण होते ही या शिशु के गर्भस्थ होते ही उसमें जीवात्मा विद्यमान हो जाती है इसलिए शरीर में उसी समय से चेतना रहती है इस चेतना के निकलते ही शरीर जड़ हो जाता है। इस ब्रह्माण्ड में जो हलचल या परिवर्तन दिखायी देता है वह सब परमात्मा की सक्रियता के कारण है चूंकि परमात्मा अजर–अमर, अजन्मा एवं अविनाशी है इसलिए सृष्टि निर्माण से पहले और सृष्टि प्रलय के बाद भी उसकी सत्ता हमेशा बनी रहती है इस प्रकार यह सृष्टि चक्र अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। इस प्रकार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस ब्रह्माण्ड की रचना परमात्मा की चेतन एवं जड़ शक्ति से हुई परमात्मा परम चेतन है जो इन दोनों का रचयिता है। जो परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है वही सृष्टि रचना का कार्य कर सकता है प्रकृति एवं जीव नहीं क्योंकि प्रकृति तो जड़ है उसे तो स्वयं अपने अस्तित्व का ही ज्ञान नहीं है अतः प्रकृति के द्वारा सृष्टि रचना सम्भव नहीं जीव भी अल्पज्ञ है वह भी सर्वशक्तिमान नहीं अतः वह भी सृष्टि रचना का कार्य नहीं कर सकता है अतः जो सबसे सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान है वही सृष्टि का रचयिता, पालक और संहारक हो सकता है। जीवों का सुखदाता और रचयिता, पालक और संहारक हो सकता है। जीवों का सुखदाता और सबसे कल्याणकारी केवल परमात्मा ही है इसलिए सृष्टि रचना से पूर्व उसने जीवों के कल्याण के लिए प्रकृति की रचना की जिससे उनके रहने खाने–पीने की व्यवस्था हो सके प्रकृति जीव और परमात्मा में अपने अपने गुण, कर्म रंग स्वभाव हमेशा रहते हैं। इन तीनों का आपस में गहरा नाता है इन्हीं के संयोग से यह ब्रह्माण्ड बना है। गुणी में उसके गुण हमेशा विद्यमान रहते हैं जैसे जल का गुण शीतल है वह पीने में भी शीतल, नहाने में भी शीतल, स्पर्श में भी शीतल ही रहता है अपने गुण को कभी नहीं छोड़ता है। इस प्रकार इस ब्रह्माण्ड में प्रकृति जीव एवं परमात्मा तीनों के अतिरिक्त चौथा कोई चीज नहीं है। मानव का सबसे बड़ा हितेषी परमात्मा ही है उसने मानव कल्याण के लिए ज्ञान भी ऋषियों के हृदयों में जाग्रत किया जिससे जीव इस संसार चक्र से निकलकर अपने असली घर को वापस जा सके।

अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक अध्यात्मिक सत्संग का आयोजन "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली–85 में दिनांक 02.07.2023 को महात्मा श्री निर्मलानन्द जी के सान्निध्य में किया गया। जिसमें दिल्ली, मुजफ्फर नगर, मेरठ, शामली, जेवर व नोयड़ा आदि के विभिन्न केन्द्रों से प्रेमीजन सम्मिलित हुए। महात्मा जी ने सत्संग प्रवचन करते हुए साधकों को संबोधित किया कि प्रत्येक साधक को आत्मशोधन या आन्तरिक शुद्धि के लिए साधना अवश्य करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अध्यात्म क्षेत्र में प्रविष्ट होकर लोक कल्याण या लोक सेवा करना चाहता है उसे साधक बनकर साधना अवश्य ही करनी चाहिए क्योंकि साधना ही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमात्मा की अनेक विभूतियाँ मानव में अभिव्यक्त हो पाती हैं। जो साधक श्रद्धा एवं विश्वास के साथ परमात्मा को समर्पित हो जाता हैं उनकी साधना असफल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। सामान्य पूजा पाठ या यज्ञादि शुभकर्म भी मानव को सुख में ही बाँधते हैं इसलिए साधक को निष्काम कर्म में ही लग जाना चाहिए। अन्य, प्रेमियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये महिला, प्रेमियों ने भी गुरू वन्दना के भजन सुनाये। आरती व प्रसाद वितरण के बाद सत्संग का समापन हुआ।

पत्रिका के विषय में प्रेमी पाठकों के विचार

1: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका प्रेमियों तथा समाज कल्याण के लिए निरन्तर प्रकाशित की जा रही है इसका लाभ समाज का प्रत्येक व्यक्ति उठा सकता है अध्यात्म आज के समाज की परम आवश्यकता है।

– ब्रज मोहन आदर्श, कालोनी (मु॰ नगर)

2: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका में प्रकाशित प्रवचन साधारण व्यक्ति को भी आदर्श नागरिक बनाने में सक्षम है अध्यात्म के बिना मानव जीवन अपूर्ण है।

– छत्रपाल सिंह, धनपुरा, (मेरठ)

3: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका अध्ययन करने से साधना एवं सेवा का महत्व ज्ञात होता है ये दोनों ही अध्यात्म के मूल स्तम्भ हैं जिन पर अध्यात्म जगत टिका हुआ है स्तम्भ ही उपरी मंजिल को टिकाऊ बनाते हैं।

– डॉ॰ राम निवास झिझाना (शामली)

4: "अध्यात्म सन्देश" मासिक पत्रिका अध्यात्म जगत में प्रवेश कराने वाली अलौकिक पत्रिका है इस पत्रिका में प्रकाशित किये भजन हृदय को छू लेते हैं। जो परमात्मा के प्रति गुरू भक्ति को दृढ़ करते हैं।

– राममूर्ति शर्मा गुड़गाँवा (हरियाणा)

DL(N)/202/2022-24

आत्म ज्ञान प्रकाश मंडल संस्था द्वारा एक अलौकिक अध्यात्म सत्संग का आयोजन

आत्म ज्ञान प्रकाश मण्डल रोहिणी दिल्ली संस्था द्वारा अलौकिक सत्संग का आयोजन दिनांक 02.07.2023 को "चेतन योग मोक्ष धाम" रोहिणी, सैक्टर–11, दिल्ली–85 में मुक्तात्मा श्री परम चेतनानंद जी के परमसेवक महात्मा श्री निर्मलानन्द जी के तत्वाधान में हुआ। सत्संग में अन्य प्रेमियों ने भी ज्ञान एवं भक्ति के विषय में अपने विचार व्यक्त किये भक्ति विषयक भजन भी सुनाये। आरती एवं प्रसाद वितरण के बाद सत्संग का समापन हुआ।

प्रकाशक एवं मुद्रक महात्मा निर्मलानन्द जी (संरक्षक), चेतन योग आश्रम, सी. एस./ओ.सी.एफ. नं. 6, ब्लॉक जी, सैक्टर–11, रोहिणी, दिल्ली–85 से प्रकाशित एवं प्रिंटिंग

सम्पादक : गजेन्द्र सिंह प्रेमी

मुद्रक : गैलेक्सी इन्टरप्राईसीस
ऑफिस नं॰ 3, ग्राउण्ड फ्लोर, प्लाट नं॰ 165, नियर चौपाल घर,
शिवा मार्किट, पीतम पुरा, दिल्ली–110034